श्री राम चन्द्र मिशन®

India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

"आपकी प्रतिक्रिया, आपकी अपरिहार्य प्रतिक्रिया मुझे यह संकेत देती है कि 'व्हिस्पर्स' में बाबूजी महाराज जो बार बार लिखते हैं वह सत्य है: कि सब हृदय सत्य के प्रति खुल रहें है। लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा आध्यात्मिक जीवन चाहिए, वे ज़्यादा से ज़्यादा वचनबद्ध होना चाहते हैं, और अपने आप को ज़्यादा से ज़्यादा आध्यात्मिकता के लिए देना चाहते हैं, जो एक बहुत ही अच्छा शुभ संकेत है।"

15 अगस्त 2012
मणपाक्कम, चेन्नई

एक दिवसीय, विशेष ऐतिहासिक भंडारा

15 अगस्त 2012, मणपाक्कम, चेन्नई में

11 अगस्त 2012 को गुरुदेव ने भाई कमलेश पटेल से 15 अगस्त के दिन मिशन की कार्य समिति की एक विशेष सभा बाबूजी मेमोरिअल आश्रम चेन्नई में बुलाने के लिए कहा। अगले दिन शाम को गुरुदेव ने मणपाक्कम के आश्रम प्रबंधक को बुलाया और उन्हें मणपाक्कम आश्रम में एक दिन का विशेष भंडारा रखने के निर्णय के बारे में बताया। उन्होंने सहज संदेश द्वारा सभी अभ्यासियों को भंडारे का न्योता देने के लिए एक पत्र लिखवाया। यह अभ्यासियों की एक विशेष 'जनरल बॉडी मीटिंग' थी। सुबह 6.30 बजे, 11.00 बजे और शाम के 4.30 बजे के लिए सत्संग का आयोजन किया गया था।

हाल ही में गुरुदेव बहुत ही कठिन इलाज के दौर से गुजरे हैं। 5 जुलाई से पेशाब और आँत से संबन्धित संक्रमण से होने वाले दर्द को उन्होंने बिना किसी शिकायत के साथ ऐसे ही सहा जैसे कि वे साधारणतया सहते हैं। मिशन के अभ्यासियों के लिए भी यह एक चिंताजनक समय था। साधारण खाने से वंचित रहने के कारण उनका वजन घट गया था और वह अपनी ज़िंदगी में सबसे लंबे समय तक गतिहीन अपने बिस्तर पर रहे। इसीलिए उनके भंडारा बुलाने पर दुनिया भर के अभ्यासी चकित रह गए लेकिन गुरुदेव के दिल से पुकारी गई आवाज़ को इक्किस हज़ार अभ्यासियों ने सुना और सिर्फ़ दो दिनों में वे मणपाक्कम पहुँचे गए!

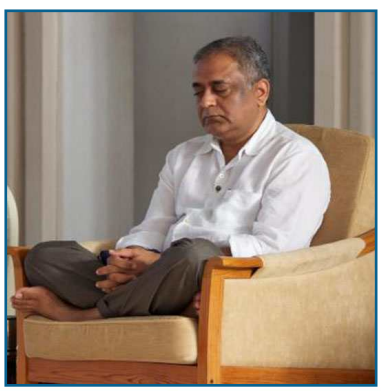

सिर्फ एक दिन पहले 11 अगस्त को गुरुदेव पर पी.ई.टी/सी.टी स्कॅन किया गया जो साफ़ था और कहीं पर कोई स्थानीय संक्रमण नहीं था। यह अच्छी ख़बर थी और सारे चिकित्सक इस नतीजे से खुश थे। गुरुदेव ने मज़ाक में कहा, "अब जब स्कॅन से साबित हो चुका है कि कोई परेशानी नहीं है तो ये चिकित्सक मुझे अब भी दवाई क्यों दे रहें हैं?" और कमरे में उपस्थित सभी खुलके हँसे।

जैसे ही भंडारे के बारे में संदेश भेजा गया तुरंत पूरे जोश से तैयारियाँ शुरू हो गईं क्योंकि सिर्फ़ तीन दिन बचे थे। बेंगलूरु के भरोसेमंद श्री फ्रांसिस को उनकी सामग्री एवं टोली के साथ बुलाया गया क्योंकि तिरुप्पुर में भंडारे के लिए मूलभूत सुविधाओं का आयोजन करने में वह काफ़ी अनुभवी हैं।

तिरुप्पुर से आए स्वयं–सेवक भी काम मे जुट गए और अगले दिनों में आने वाले दस से पंद्रह हज़ार अभ्यासियों की सुविधाओं की तैयारी में लग गए। पूरा आश्रम टैंट और शामियाने से भर गया। हर एक खुली और समतल जगह पर ध्यान अथवा रहने के लिए टैंट लगाए गए। करीब 25,000 वर्ग फुट तक के इलाके में ध्यान कक्ष के दोनों तरफ चार टैंट लगाए गए तथा एक ओर 30,000 वर्ग फ़ुट के शामियाने भी रहने के लिए लगाए गए।

रहने का इंतजाम करना एक बहुत बड़ी चुनौती थी। आश्रम के करीब रहने वाले लगभग सारे अभ्यासियों ने अपने घरों में अथिति अभ्यासियों के रहने की व्यवस्था की। इस सहभाजन और साथ में रहने के चलते सच्चे भाईचारे का एहसास हुआ। आश्रम और अभ्यासियों के घरों के अलावा, ओमेगा स्कूल में भी करीब 1500 अभ्यासियों का इंतजाम किया गया और पास के चर्च के सुसज्जित शादी के मंडप में करीब 900 और अभ्यासी ठहराए गए। कुल मिलाकर सबके रहने की सुविधाओं का बड़ी ही शिष्टता के साथ इंतजाम किया गया।

क्योंकि यह गुरुदेव कि इच्छा थी कि इस आयोजन के लिए सारे आश्रम को सजाया जाए प्रकाश और अलंकरण की व्यवस्था 14 अगस्त की रात को पूरे समय चलती रही। गुरुदेव की कुटीर, बाबूजी मंडप, ध्यान कक्ष, रुची कैफ़े, आश्रम का प्रमुख द्वार और लगभग आश्रम के सभी भागों को फ़ूल, बत्तियों और अन्य अलंकारों से अलंकृत किया गया। गुरुदेव को अलंकार के बारे में ख़बर पहुँची कि सारा आश्रम चमक रहा है, एकदम साफ़ है और अभ्यासियों से भरा हुआ है। सबको आश्चर्यचकित करते हुए गुरुदेव ने तय किया कि वे पहियेदार कुर्सी पर बैठकर आश्रम की एक सैर करेंगे। पहले उन्होंने चिकित्सक से सिर्फ़ बरामदे तक लेकर जाने के लिए कहा। जब बाबूजी मंडप को प्रकाशित और अलंकृत देखा तो उन्हें वहाँ लेकर जाने के लिए कहा। जैसे ही गुरुदेव वापस आ रहे थे उन्होंने हाथ उठाकर इशारे से कुटीर के मुख्य द्वार की ओर दिखाया। वहाँ से वे ध्यान कक्ष की सजावट को देखने के लिए उसकी ओर बढ़े।

मालिक ने नवनिर्मित रॅम्प से ध्यान कक्ष में प्रवेश किया और ध्यान कक्ष का अवलोकन करने के लिए मंच पर गए। शाम के करीब 8 बजे थे और सारे अभ्यासी जो वहां कार्यरत थे मालिक को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। ध्यानकक्ष को छत से लेकर स्तंभों के ऊपरी सिरे तक चारों ओर से पर्दों और रोमन शैली की पुष्प सज्जा से सजाया गया था। मालिक कॉटेज में वापस लौट गए और वापस जाते समय कोई भी उनके दमकते चेहरे को देख सकता था।

अभ्यासी बड़ी संख्या में आश्रम आ रहे थे। सभी जगह अभ्यासी थे। वहां कोई जगह खाली नहीं थी। शायद ही कोई पूरी रात सोया होगा। हालांकि एक बात जो देखी गयी वो ये थी कि इतनी तंगी की स्थिति में भी कोई हंगामा या अव्यवस्था नहीं थी व शांति और सुव्यवस्था बनी हुई थी। सभी ओर मदद करने के लिए हाथ उठे हुए थे। प्रातः 6.30 का सत्संग भाई कमलेश पटेल ने संचालित किया जो एक घंटे चला। जब सत्संग समाप्त हुआ और अभ्यासी ध्यानकक्ष से बाहर आने लगे तब ध्यानकक्ष से नज़ारा देखने योग्य था। जबरदस्त शांति और आत्मानुशासन था और एक भी अभ्यासी ने लय को तोड़ने की कोशिश नहीं की, और किसी ने भी मालिक को देखने के लिए मास्टर कॉटेज में जाने की कोशिश नहीं की।

यह घोषणा की गयी कि मालिक प्रातः 9.30 बजे ध्यानकक्ष में आने वाले हैं और इसी लिए सभी अभ्यासियों से पुनः एकत्रित होने का अनुरोध किया गया। यह वास्तव में उस दिन का बहुप्रतीक्षित अवसर था। सुबह करीब 10.30 बजे मालिक अपनी व्हील चेयर के द्वारा ध्यानकक्ष पहुँचे। उनकी व्हील चेयर के साथ उनके श्वसन की सहायता के लिए आक्सीजन सिलेन्डर लगाया गया था। लगता था हाल ही कि बीमारी ने उनके शरीर पर गहरा असर किया है और वे काफ़ी कमज़ोर लग रहे थे और उनका एक शब्द या हल्का कंपन भी उनकी शारीरिक प्रणाली को तनाव दे रहा था। वहां उपस्थित अधिकतर अभ्यासी उनके स्वास्थ्य के बारे में एक लंबी अवधि की व्याकुलता के बाद उन्हें देख रहे थे और उन्हें अपने सामने पाकर प्रत्यक्षतः खुश़ नज़र आ रहे थे। मालिक अपनी वर्तमान बीमारी और कैसे उसने उन्हें प्रभावित किया है के बारे में बोले। उन्होंनें कहा कि वे मिशन के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देना चाहते हैं और अपने स्थान पर भाई कमलेश पटेल को अध्यक्ष नियुक्त करना चाहते हैं। उन्होंनें कार्यकारी समिति के सदस्यों से पूछा कि क्या वे इससे सहमत हैं, पर उन्होंनें उन्हें एक दूसरा विकल्प सुझाया कि मालिक अध्यक्ष बने रहें और भाई कमलेश पटेल को उपाध्यक्ष बना दें। मालिक ने पूरी सभा से उनकी राय पूछी जिसने अपनी सहमति ज़ोरदार तालियों से व्यक्त की। मालिक ने कहा कि उपाध्यक्ष मालिक की प्रत्यक्ष देखरेख और मार्गदर्शन में अध्यक्ष की सभी शक्तियों, कर्तव्यों और अधिकारों का प्रयोग करेगा। इसके बाद मालिक ने एक छोटी सिटिंग दी जो करीब 15 मिनिट चली और फ़िर वे कॉटेज में लौट गए। शाम का सत्संग भाई कमलेश पटेल ने संचालित किया और सत्संग के पहले मिशन के सचिव और संयुक्त सचिव ने सुबह की घटनाओं और कार्यसमिती द्वारा पारित प्रस्तावों को स्पष्ट किया।

भाई कमलेश पटेल मिशन के उपाध्यक्ष नियुक्त किए जाने के प्रस्ताव को सदन में पढ़ा गया एवं इसे कार्यकारिणी की बैठक द्वारा पास किया गया। सत्संग के पश्चात् भाई कमलेश पटेल ने एक वार्ता दी और दो महत्वपूर्ण बिंदुओ पर ज़ोर दिया। पहला यह की मिशन की सेवा के लिए या काम करने के लिए किसी भी पदवी या ओहदे की आवश्यकता नहीं है और दूसरी बात यह कि "एकता और समन्वय" समय की आवश्यकता है और इसे हमेशा किसी भी कीमत पर और परिस्थिति में भाईयों और बहनों के बीच बनाए रखा जाना चाहिए। भाई कमलेश ने अभ्यासियों को यह भी बताया कि मालिक कितने खुश थे जब उन्हें बताया गया कि 21000 हजार लोग भंडारे में उपस्थित हुए हैं। मालिक हैरान होकर बोले, "केवल दो दिन की सूचना के आधार पर इतने लोग आए ..... वे मेरे लोग हैं!"

शाम के सत्संग के समाप्त होने के पश्चात् अभ्यासी वापस जाना शुरू हो गए और आश्रम के बाहर मुख्य मार्ग पर यातायात को नियंत्रित करना एक चुनौती बन गया। वफ़ादार भक्तों को राहत थी कि मालिक ने त्यागपत्र की अपनी मूल मंशा को छोड़ दिया और मामलों की पतवार को जारी रखने की विनय सहित सहमति दी। साथ ही उन्होंने भारी प्रशासनिक दबाव को हल्का करने हेतू उनके नामांकित उतराधिकारी के जवां कंधों को यह जिम्मेवारी सौंपकर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया।

सतत् स्मरण प्रेमी को अपने प्रियतम के नज़दीक ले आता है। इस निकटता की कोई सीमा नहीं है। प्यार जितना गहरा होगा और लगाव जितना अधिक होगा, उतना ही अधिक हम 'उसकी' ओर बढ़ते जाते हैं। यह रिश्ता हमें विरासत में मिलता है। अब यह हम पर निर्भर करता है कि कैसे हम उनके साथ अधिकतम निकटता विकसित करें।

– यह बाबूजी महाराज द्वारा
"रामचन्द्र की सम्पूर्ण कृतियाँ, भाग–1",
पृष्ठ 207 से लिया गया है।

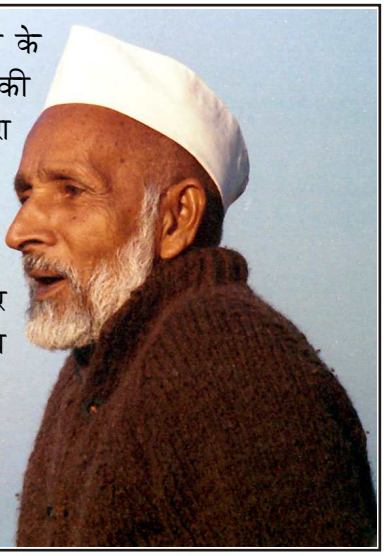

मालिक की रिपोर्ट

बृहस्पतिवार, 21 जून 2012

मालिक गायत्री में थे और उन्होंने उनके जन्मोत्सव को तिरुप्पुर में मनाने का निर्णय लिया। वास्तव में यह बहुत ही खुशी भरा समाचार था। मालिक ने जुलाई 2011 में बाबूजी से दो संदेश प्राप्त किए जिनमें इस तरह के उत्सवों के दौरान एक साथ एकत्रित होने के महत्व पर बल दिया गया और यह कि ये साल दर साल होने चाहिए। जब मालिक ने ये संदेश पढ़े, उन्होंने यह निर्णय लिया कि उत्सव होना चाहिए और यह तिरुप्पुर में हो सकता है। उन्हें इस बात की चिंता थी कि अभ्यासी अपनी मेहनत की कमाई इस तरह के उत्सवों की यात्रा में व्यय करतें हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उत्सव के लिए किसी भी प्रकार के दान का सुझाव नहीं दिया जाना चाहिए और यह पूर्णतया स्वेच्छिक होना चाहिए।

शुक्रवार, 22 जून 2012

मालिक आश्रम आए और विशाखापट्टनम तथा आंध्र प्रदेश के अन्य केन्द्रों से भारी संख्या में आए हुए अभ्यासियों से मिलने के लिए शयनगार 'ए' (डॉर्म ए) गए। वहां बहुत अधिक भीड़ थी और शयनगार खचाखच भरा हुआ था। मालिक से मिलने के लिए सभी की ओर से अत्याधिक दबाव था। मालिक ने एक सिटिंग दी और बाद में एक भाषण दिया। उन्होंने विशेष तौर पर "मूढ़ भक्ति" (अंध विश्वास) विषय को संबोधित किया और कहा कि यह एक असली समस्या है तथा किसी को इस जाल में नहीं फंसना चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक को निर्धारित अभ्यास करना चाहिए और सहज मार्ग के फायदे देखने चाहिए और पूजा के पुराने तरीके और रिवाज़ अपनी वास्तविक तरक्की के हित में छोड़ देने चाहिए। मालिक ने लोगों की बड़ी संख्या के बीच से धैर्यपूर्वक पूर्वक रास्ता बनाया और वापस अपने कॉटेज चले गए।

दोपहर में गुरुदेव ने एक वृद्ध महिला के लिए 'व्हील चेयर' खरीदवाने का इंतजाम किया जिसे उन्होनें शाम को इस बहिन को भेंट स्वरूप देना था। वे शाम को उनके स्थान पर गए और इसे भेंट में दिया।

यह एक अच्छा देखने लायक क्षण था जिससे इस वृद्ध महिला के प्रति मालिक की चिंता और प्रेम को देखा जा सकता था। तत्पश्चात् मालिक गोल्फ़ गाड़ी में बैठकर चलते हुए कई अभ्यासियों से मिले। वे जलपान गृह के बाहर रुक गए। जलपान गृह से कुछ अल्पाहार–सामग्री लाई गई जिसे उन्होंने ग्रहण किया और अपने इर्द–गिर्द खड़े अभ्यासियों को भी वितरित किया। इसके पश्चात् मालिक अपने कॉटेज में आ गए और कार्य में व्यस्त हो गए।

शनिवार, 23 जून 2012

तिरुप्पुर से लगभग 15–20 अभ्यासी प्रातः उपस्थित थे और उनमें से कुछ के साथ मालिक अपने शयन कक्ष में बातचीत कर रहे थे। तत्पश्चात् मालिक उन सभी से मिले और कहा कि अल्पाहार के बाद वे उनसे पुनः मिलेंगे और फिर प्रत्येक उपस्थित अभ्यासी को प्रसाद वितरित किया। अल्पाहार के पश्चात् मालिक हॉल में आए और सभी अभ्यासी उनके इर्द–गिर्द बैठ गए।

मालिक ने कहा, "मुझसे प्रश्न पूछो।" उन्होंने ऐसा एक से अधिक बार कहा ताकि आगामी समारोहों से सम्बन्धित सभी प्रश्नों एवं शंकाओं का स्पष्टीकरण सुनिश्चित रूप से हो जाए।

एक अभ्यासी ने मालिक से कहा, "जब कार्य आता है तो मैं उत्तेजित हो जाता हूँ और अपना धैर्य खो देता हूँ।" मालिक ने यह कहते हुए उत्तर दिया, जब कभी तुम्हें कोई निर्णय लेना हो, तुम एक कदम पीछे हटकर कुछ गहरी सांस लो, अथवा ऊपर आकाश की ओर देखो और तब निर्णय करो। तुम्हें ठहराव सीखने की आवश्यकता है, और उन्होनें स्वयं गहरी श्वास लेकर ऊपर देखकर इसे करके बताया। तब उन्होंने कहा, "कार्य बहुत मोहक हो सकता है और हमें सतर्क रहना चाहिए।"

रविवार, 24 जून 2012

मालिक ने भाई कमलेश को प्रातः सत्संग के दौरान उनके नज़दीक बैठने के लिए कहा जो कि लगभग एक घण्टे तक चला और सत्संग के अन्त में भाई कमलेश स्वस्थ महसूस नहीं कर रहे थे। इसके बाद एक सप्ताह से अधिक समय तक वे किसी 'वायरल' संक्रमण से पीड़ित थे।

25–29 जून 2012

सप्ताह के अधिकांश भाग में मालिक स्वस्थ नहीं थे। वे अधिकतर विश्राम ही कर रहे थे और किसी भी अभ्यासी से नहीं मिल रहे थे। शुक्रवार को रात्रि भोजन के पश्चात् मालिक अकेले बैठे हुए थे और शोभा गुर्टु द्वारा गाया गीत "म्हारो प्रणाम" सुन रहे थे। मालिक उस गीत से बहुत मन्त्र मुग्ध हुए। उन्होंने बहुत तन्मयता से सुना और यह उन सभी उपस्थित जनों के लिए एक महान अनुभव रहा जो शान्त बैठे थे एवं उस भजन को सुन रहे थे।

रविवार, 1 जुलाई 2012

प्रातः कालीन सत्संग के लिए मालिक शीघ्र तैयार हुए। सत्संग के पश्चात् मालिक ने अल्पाहार ग्रहण किया और भाई आदित्य एवं उनकी माता बहिन सुजाता से लम्बी मन्त्रणा की। आदित्य मालिक के भाई के पौत्र हैं। वे अपने परिवार के एक विवाह समारोह में सम्मिलित होने एवं मालिक से मिलने हेतु भारत आए थे। मालिक को आदित्य पर विशेष ध्यान देते हुए देखा गया।

मालिक प्रातः कालीन सत्संग पर वार्ता कर रहे थे। एक अभ्यासी ने कहा यह 1 घण्टा और 5 मिनट था तथा मालिक ने सही करते हुए संक्षेप में कहा यह 1 घण्टा 7 मिनट था। मालिक ने कहा यह एक असाधारण सिटिंग थी। उन्हें अनुभूति हुई मानो उन्हें कोई पृथक आकाश गंगा में कहीं काले छिद्र में खींच रहा हो।

विचार–विमर्श के पश्चात् मालिक होसुर के अभ्यासियों से मिले और उनकी आवासीय कॉलोनी के ज़मीन के दस्तावेज़ उन्हें वितरित किए। वे लगभग 60 अभ्यासी थे और यह मालिक के लिए काफ़ी थकाने का कार्य था। इसके पश्चात् वे विश्राम हेतु चले गए और सायं 7 बजे के आस–पास ही जागे। तैयार होकर वे कोलकाता से आए अभ्यासियों के एक बड़े समूह से मिले जो अभी–अभी ही पहुँचे थे। बैठक उनके

शयन कक्ष में हुई और यह पूर्ण शाँत वातावरण में थी। कोई नहीं बोला तथा हर एक इस शाँत समागम के दौरान सभी के लिए गुरुदेव के प्रेम को महसूस कर रहा था।

मालिक ने आश्रम से सम्बन्धित कुछ निर्माण कार्य की प्रस्तुति को टीवी पर देखा, फिर ऑफिस में ही रात्रि भोज लिया और फिर एक अभ्यासी की अरंगेतरम नृत्य प्रस्तुति का थेट प्रक्षेपण टीवी पर देखा।

मंगलवार, 3 जुलाई को गुरु पूर्णिमा थी। इस शुभ अवसर पर सुबह 6 बजे से ही बहुत से लोग कुटिया पर मालिक का आशीर्वाद पाने एकत्रित हो गए। मालिक धैर्य पूर्वक सभी से मिले और उन्हें आशीष दिया। उन्होंने कहा," जब मैं अपने मालिक के पास गया था तब मुझे गुरु पूर्णिमा के बारे में कुछ भी पता नहीं था। मैं 40 साल का था और बाबूजी महाराज ने कहा चालीस गुना तेज़ी से तरक्की करो। मैं आप सभी को उसी तरह आशीर्वाद देता हूँ।"

सुबह के सत्संग के बाद, जो लगभग एक घन्टे तक चला, मालिक ने नौ शादियां संपन्न कराईं और कुछ भजन सुने और फिर अपने कमरे में लौटे। आज बहुत अधिक दबाव था और प्रत्येक व्यक्ति मालिक से मिलना चाहता था लेकिन मालिक थके हुए थे और वे आराम करने चले गए।

रविवार, 8 जुलाई 2012

इस सप्ताह में अधिकांश समय मालिक अस्वस्थ रहे। 9 तारीख को वे गायत्री गए और सप्ताह के अंत में आश्रम लौटने की योजना बनाई।

गायत्री में मालिक बहुत अच्छी मनोदशा में थे मगर उनका स्वास्थ्य प्रतिदिन अच्छे और बुरे के बीच झूल रहा था। उनके स्वास्थ्य में ऐसे तेज़ परिवर्तन देखना बहुत ही दुख की बात थी। पिछली रात वे अच्छा महसूस नहीं कर रहे थे और जल्दी ही सो गए। सुबह वे बहुत ही अच्छी मनोदशा में थे जो अविश्वसनीय था। उन्होंने उत्सव समिति को तिरुप्पुर में कार्य की प्रगति के बारे में सन्देश भेजा। मालिक ने कहा, "कार्य के इस तीव्र गति से होने पर कोई आश्चर्य नहीं है। जब इसे प्यार से करते हैं तो पूरी प्रकृति सहयोग करती है। मुझे हमेशा एक मां की याद आती है जो अपने बच्चे को नौ महीनों तक सारी भौतिक तकलीफों को सहते हुए धारण करती है – अपने अजन्मे शिशु के सुनहरे भविष्य की आशा के सहारे, केवल अपने प्रेम के सहारे उस के लिए जो अभी तक भविष्य में है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि ऐसा प्रेम हमारे अभ्यासियों में आशीर्वाद स्वरूप आए।" मालिक ने फिर मां के विषय को विस्तार से समझाया जिसे उन्होंने 'ट्री ऑफ लाइफ' (जीवन का वृक्ष) नाम दिया। उन्होंने एक वृक्ष का चित्र बनाने का प्रयास किया और इस सन्देश को चित्र द्वारा भी प्रस्तुत किया।

मालिक 14 जुलाई शनिवार को आश्रम वापस लौटे लेकिन उनका स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक नहीं था। 15 तारीख को वे वास्तव में बीमार पड़ गए और उन्हें अपने जन्मोत्सव पर तिरुप्पुर जाने का कार्यक्रम रद्द करना पडा।

मालिक ने 16 जुलाई को नए 'मीडिया रूम' के उद्घाटन की योजना बनाई थी पर चूंकि वे अस्वस्थ थे भाई कमलेश ने उसका उद्घाटन किया। मीडिया के कमरे का निर्माण आधुनिक तकनीकों से युक्त था जिसमें कई घनाकार स्थान, आय.टी. सर्वर क्षेत्र और 100% ध्वनि प्रतिरोधि (साउंड प्रूफ़) कमरा था जहां ऑडिओ रेकॉर्डिंग की जा सके।

मालिक की बीमारी लगभग तीन सप्ताह तक चली लेकिन अब वे धीमी गति से स्वस्थ हो रहे हैं। मणपाक्कम आश्रम जुलाई के अंत तक आगंतुकों के लिए बंद कर दिया गया। कई अभ्यासी जिन्होंने तिरुप्पुर उत्सव के बाद मणपाक्कम आश्रम आने की योजना बनाई थी उन्हें अन्य व्यवस्था करने को कहा गया। अभ्यासियों को मालिक के स्वास्थ्य की एवं उसमें धीमी गती से सुधार की सूचना मालिक की सेवा करने वाले डॉक्टरों द्वारा समय–समय पर दी जाती रही। हम सभी अभ्यासी भाई–बहनों से निवेदन करते हैं कि वे हमारे पूज्य मालिक के स्वास्थ्य में तीव्र सुधार, अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए प्रार्थना करते रहें।

नए प्रकाशन

तिरुप्पुर में मालिक के 86 वें जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर बीस पुस्तक व आठ ओडियो–विजुअल उत्पाद रिलीज़ किए गए। काँच, केन्वास व चमकीली प्लाई पर उकेरे हुए छायाचित्रों का एक विशेष समूह प्रकाशित किया गया। इसके लिए बुकिंग शुरु है व पूर्वादेश आधार पर उपलब्ध है। रुचि रखने वाले अभ्यासी july24.photos@gmail.com पर ईमेल के द्वारा संपर्क कर सकते हैं। छायाचित्रशाला में बहुत तरह के एवं लगभग छोटे से लेकर बड़े व मूल्यों के अनुसार कई सौ छायाचित्र उपलब्ध थे।

ऑडियो–विडियो उत्पाद

व्हिस्पर्स फ्रैंच एम पी 3

ही, हुक्का एण्ड आई– इंग्लिश डी वी डी

सहज मार्ग मियांडरिंग्स – इंग्लिश डी वी डी

मास्टर्स टॉक टू प्रिफेक्ट्स– वॉल्यूम 1 एन्ड 2– इंग्लिश एम पी 3

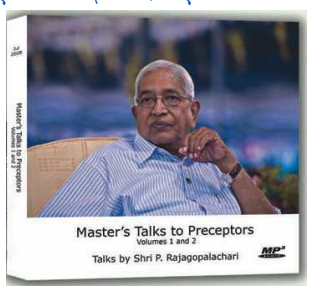

मास्टर्स टॉक इन चेन्नई एन्ड कोयम्बटूर – तमिल डी वी डी

दि इटर्नल पावर ऑफ लव – वोल्यूम 1 – इंग्लिश डी वी डी

मास्टर्स चॉईस – वोल्यूम 4 एम पी 3

इनर रिफ्लेक्शंस वोल्यूम 2 इंग्लिश एम पी 3

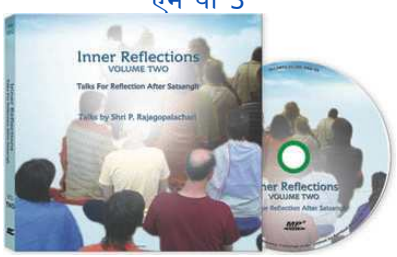

नई पुस्तकें

ही, दि हुक्का एन्ड आई– इंग्लिश

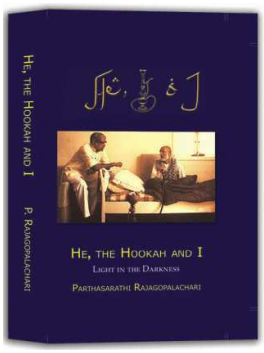

कमेंटरी ऑन टैन मेक्सिम्स ऑफ सहज मार्ग

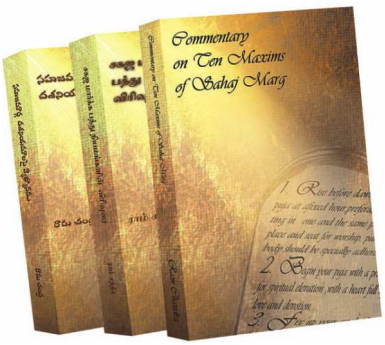

अभ्यासी डायरी

प्रिफेक्ट्स डायरेक्टरी

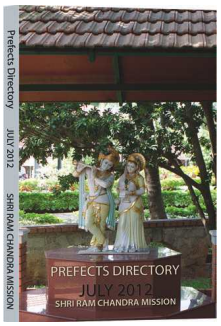

कॉमिक बुक – टिमोथी

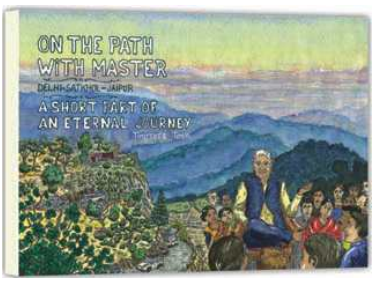

मैसेजेज् यूनिवर्सल भाग 2 –

तमिल
तेलगू
मराठी
गुजराती
कन्नड
मलयालम

दि प्रिन्सिपल्स ऑफ सहज मार्ग – वोल्यूम 15

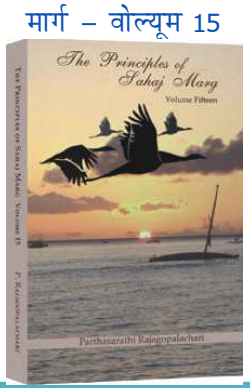

दि परस्यूट ऑफ इनर वे

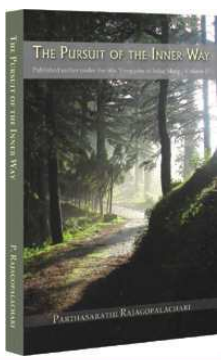

गुरुदेव के 86वें जन्मदिवस का उत्सव समारोह

असम– दिब्रुगढ़ के अभ्यासियों ने इस अवसर को बहुत उत्साह के साथ मनाया। एक बच्चे ने 'हैप्पी बर्थडे' की धुन बजाई और एक बहन ने भजन गाए। गुरुदेव की दो छोटी वार्ताओं को वी.सी.डी. पर चलाया गया और सुबह के नाश्ते और प्रसाद–वितरण के बाद सत्र का समापन हुआ।

इलाहाबाद – सत्संग के बाद बच्चों का नृत्य, बहनों के द्वारा गुरुदेव के प्रिय भजन गाना और गुरुदेव के जन्मदिन का गीत युवाओं के दल द्वारा गाना, सत्र की प्रमुख झलकियाँ थीं। लगभग 600 अभ्यासियों ने गीत गाने और गुरुदेव को शुभकामनाएँ देने में साथ दिया। अभ्यासियों ने ध्यान कक्ष के चारों ओर नीम के पौधे लगाए। बहन निशा और उनके दल ने एक आपसी वार्तालाप का सत्र आयोजित किया। कार्यक्रम का समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ।

लखनऊ – लगभग 200 अभ्यासी 3 दिन के उत्सव में सम्मिलित हुए। 23 जुलाई को सुबह के सत्संग के बाद विचारोत्प्रेरक वार्ताएं हुईं और कुछ अभ्यासियों ने अपने अनुभवों को सुनाया। 24 जुलाई को भारी वर्षा के बावज़ूद 300 अभ्यासी आश्रम पहुँचे। सुबह के सत्संग के बाद बच्चों की प्रस्तुतियों ने अभ्यासियों के दिलों को छू लिया। एक आपसी वार्तालाप पर आधारित नाटक ने सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पंजाब और हरियाणा – पंजाब और हरियाणा के अभ्यासियों ने अपने–अपने केन्द्रों में गुरुदेव का जन्मोत्सव मनाया। सोनीपत में 3 दिन का उत्सव आयोजित किया गया और इसमें लगभग 100 अभ्यासी सम्मिलित हुए। सत्संग के बाद गुरुदेव की सी.डी. और लालाजी के जीवन पर आधारित वीडियो चलाए गए। पटियाला में बच्चों के लिए चित्रकारी और लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई और तीनों दिन तीन सत्संग हुए। चंडीगढ़ में लगभग 55 अभ्यासी उत्सव में सम्मिलित हुए। शाम के समय गुरुदेव के स्वास्थ्य में सुधार के संदेश ने सभी अभ्यासियों को आनन्दित कर दिया।

कोलकाता आश्रम – लगभग 300 अभ्यासी कोलकाता से और 50 अभ्यासी आस–पास के केन्द्रों जैसे झारखंड, बान्देल, शान्तिपुर आदि से 23 से 25 जुलाई तक के उत्सव में सम्मिलित हुए। 24 जुलाई को रवीन्द्र संगीत, भजन, गुरुदेव की यात्रा पर एक डी.वी.डी. का प्रदर्शन, वरिष्ठ अभ्यासियों द्वारा उनके अनुभवों की जानकारी, पद्धति के अभ्यास का महत्व तथा भंडारों में सम्मिलित होने के महत्व जैसे विषयों पर वार्ताओं का आयोजन किया गया। वार्ताओं के बाद सहज मार्ग पद्धति के तत्वों पर एक आपसी वार्तालाप का सत्र आयोजित किया गया।

दोपहर के खाने के बाद गुरुदेव की हिन्दी और अंग्रेजी में डी.वी.डी. पर वार्ताओं का सत्र जारी रहा और गुरुदेव की 'यादों की गलियों से' पुस्तक पर एक प्रस्तुति ने सभी को अपने प्रियतम के स्मरण में डूब जाने में सहायता की।

राजस्थान

जयपुर: तीनों दिन सुबह 7.30 बजे और शाम को 5 बजे सत्संग कराए गए। उत्सव में लगभग 280 अभ्यासी और 65 बच्चे उपस्थित थे। 24 जुलाई को बच्चों ने एक गीत गाया और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। सहज मार्ग के विभिन्न पक्षों पर भाई तरुण, बहन अंजलि और भाई अनिल ने वार्ताएं थी। 25 तारीख को सत्संग के बाद बहन रमा कोचर ने बाबूजी की प्रशंसा में एक भक्ति कविता गाई।

उदयपुर: सुबह के सत्संग के बाद गुरुदेव की आत्मकथा पढ़ी गयी और सहजमार्ग पद्धति की प्रभावशीलता पर चर्चा हुयी। एक सामूहिक चर्चा के बाद बहनों ने भजन गाए। बच्चों ने बहुत सी कविताएं गायीं। सभी ने एक आध्यात्मिक खेल खेला और जो विषय दिए गए थे उनको चुनकर उन पर वार्ता दीं।

जोधपुर: 275 अभ्यासी तीन दिन के उत्सव में सम्मिलित हुए। अभ्यासियों ने भजन गाए और आश्रम के कार्यों में भाग लिया। इस बात पर चर्चा हुई कि आध्यात्म में प्रत्येक बीमारी की दवा केवल साधना है। अभ्यासियों ने सहजमार्ग में आने के बाद के अपने अनुभव सुनाए। सभी ने गुरुदेव के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की।

अजमेर: 48 अभ्यासी सुबह 7.30 बजे सत्संग के लिए एकत्रित हुए। गुरुदेव की वीडियो वार्ताएं, विशेष व्हिसपर्स संदेशों का पढ़ना और गुरुदेव की वार्ताओं के कुछ अंशों का पढ़ना आदि कार्यक्रम के आकर्षण थे। अभ्यासियों और बच्चों द्वारा भजन, कविताएं और चारी जी और उनके जीवन पर एक प्रश्नोत्तरी ने दिन के कार्यक्रम को रोचक बनाया। भाई पी. के. अरोरा ने भंडारों में सम्मिलित होने के महत्व के बारे में वार्ता दी। 11 बजे के सत्संग के बाद एक वीडियो वार्ता थी। शाम का सत्संग भाई पी. के. अरोरा के घर पर हुआ।

अलवर: अलवर योगाश्रम में 23 से 25 जुलाई तक 160 अभ्यासी अलवर और आस–पास के क्षेत्रों जैसे राजगढ़, खैरथल, कोटपुतली, बान्दीकुई, महवा और पीलवा से उत्सव में सम्मिलित हुए। अभ्यासियों ने गुरुदेव के जीवन का स्मरण किया और उनके चरित्र के अनेक गुणों का उदाहरण दिया जैसे निस्वार्थ प्रेम और सेवा।

श्रीगंगानगर: भाई पी. के. मिधा के घर पर लगभग 130 अभ्यासी और 30 बच्चे उपस्थित थे। सुबह के सत्संग के बाद गुरुदेव के जीवन के बारे में पुस्तक पढ़ी गयी। एक कविता पाठ और 'गुरु पूर्णिमा' पर एक वीडियो दिखाया गया। शाम के समय बच्चों ने कविताएं और गीत गाए।

भीलवाड़ा: सुबह 7.30 बजे के सत्संग के बाद 'मास्टर्स चॉइस' में से भजन प्रस्तुत किए गए। अभ्यासियों और उनके बच्चों ने भी कुछ कविताएं और भजन प्रस्तुत किए। 'सत्य का उदय' पुस्तक के कुछ अंश पढ़े गए। कार्यक्रम के अन्त में एक सी. डी. 'इन्सान बनो' चलायी गई। सुबह के सत्संग में 50 अभ्यासी और शाम के सत्संग मे 21 अभ्यासी उपस्थित थे।

प्रचार करते हुए संदेश फैलाना...

अध्यापकों को प्रोत्साहित करना, काशीपुर, उत्तराखंड

एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम में अभ्यासियों को दो समूहों में बाँटा गया और उनसे नए अभ्यासियों द्वारा सामान्यतया पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची बनाने के लिए कहा गया। उसके पश्चात् दो अभ्यासी आमने–सामने बैठे और एक नाटकीय सत्र सम्पन्न किया। कई प्रश्न सामने आए और हमने यह अनुभव किया कि साधना के मूल तत्वों और नए अभ्यासियों को इस विषय में क्या बताया जाए, यह जानना अति आवश्यक है।

इसके पश्चात् एक भाई, जोकि एक स्कूल चलाते हैं, ने अध्यापकों के एक समूह को प्रेरित किया और 7 अगस्त को एक छोटी सभा का आयोजन किया। अध्यापकों को सहज मार्ग के विषय में संक्षिप्त जानकारी इश्तहार के साथ पहले ही दी जा चुकी थी। छोटे व्यक्तिगत उद्देश्यों और मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य में अन्तर समझाया गया और उसके बाद धर्म से आध्यात्म की ओर प्रगति तथा अन्त में साधना के विषय में जानकारी दी गयी। उपस्थित श्रोताओं ने वार्ताओं की सराहना की और अधिकतर अध्यापकों ने आश्चर्य प्रकट किया कि उन्होंने पहले कभी इन धारणाओं के विषय में कुछ नहीं सुना।

इस बात को महसूस किया गया कि बड़े ओपन हाउस की तुलना में एक छोटे समूह में खुलना और विषय से जुड़ना ज़्यादा आसान होता है। सत्र में लगभग 15 अध्यापकों ने भाग लिया और यह डेढ़ घन्टे तक चला। इसका समापन प्रश्न–उत्तर काल के साथ सम्पन्न हुआ।

विद्यार्थी और युवा, कोलकाता

12 अगस्त को कोलकाता आश्रम में हैरिटेज प्रौद्योगिकी संस्थान (इंस्टिट्यूट आफ टेक्नोलॉजी) से आए नए उत्साहित जिज्ञासुओं के लिए एक खुले सत्र (ओपन हाऊस) का आयोजन किया गया। स्वागत संदेश के पश्चात् कोलकाता के केन्द्र प्रभारी भाई मिसल मेहता ने 'सहजमार्ग के प्रमुख तत्वों' विषय पर एक व्यापक प्रस्तुति दी। प्रस्तुति का आरम्भ उन्होंने यह समझाकर किया कि किस तरह एक मनुष्य अपने सामाजिक–आर्थिक दिखावे को अपना वास्तविक संसार समझता है और इस प्रकार प्राकृतिक उत्पत्ति से अलग हो जाता है। उन्होंने योग और ध्यान जैसे विषयों को कई उदाहरण देकर समझाया।

इसके पश्चात् चार युवा अभियंता (इन्जीनियर) अभ्यासियों को कुछ मिनट बोलने के लिए आमन्त्रित किया गया जहाँ उन्होंने मिशन में सम्मिलित होने के कारण और उनके अब तक के अनुभव के बारे में बताया। कार्यक्रम का समापन एक संक्षिप्त प्रश्नोत्तर सत्र के साथ हुआ। कार्यक्रम में सम्मिलित लगभग 70 व्यक्तियों को सहजमार्ग परिचयात्मक विवरण–पुस्तिका वितरित की गई।

पुलिस अधिकारियों को सम्बोधन, मैसूर

16 अगस्त 2012 को मिशन के संयुक्त सचिव भाई ए. पी. दुरई को कर्नाटक पुलिस अकादमी, मैसूर में सामान्य प्रशिक्षण पा रहे 39 सीधे नियुक्त सहायक पुलिस अधिक्षकों और 19 सब–इंसपेक्टरों को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया। श्री अमर कुमार पाण्डे, आई. पी. एस., इन्सपेक्टर जनरल ऑफ पुलिस और अकादमी के निर्देशक ने वक्ता का परिचय यह बताते हुए दिया कि कर्नाटक में एक पुलिस अधिकारी के रूप में वह एक अनुकरणीय व्यक्ति रहे और 1996–97 में राज्य में डी. जी. पी. के पद पर उनकी उपलब्धियों को बताया।

भाई दुरई ने "पुलिस अधिकारियों के लिए चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण" विषय पर वार्ता दी। उन्होंने इस संदर्भ में अधिकतर उद्धरण गुरुदेव की शिक्षाओं में से लिए और इस बात पर विशेष बल दिया कि कैसे कर्म हमारे जीवन को संचालित करते हैं और क्यों हम अपने विचारों और कार्यों के परिणामों के लिए स्वयं ही जिम्मेदार हैं। भाई दुरई ने पुलिस कैरियर के दौरान अपने अनुभवों और प्रेक्षणों के आधार पर इस सिद्धान्त का उदाहरण दिया। अपने कर्तव्यों को बिना डर और पक्षपात के निभाने और अंतरात्मा के प्रति ध्यान लगाने सम्बन्धित उनकी पुकार ने सभी को प्रभावित किया।

प्रशिक्षण ले रहे व्यक्तियों ने जीसस क्राइस्ट और भगवद गीता के उद्धरणों को ध्यान से समझा और वक्ता के साथ वार्तालाप किया तथा अपने विचार और प्रश्न भी व्यक्त किए। यह सत्र 90 मिनट तक चला और गुरुदेव की उपस्थिति और प्रेरणा पूरे समय अनुभव की गई।

उपस्थित व्यक्तियों में हैरिटेज के 30 विद्यार्थी और बाकी नए जिज्ञासु और अभ्यासी थे। प्रतिक्रिया काफी सकारात्मक थी और कुछ लोगों ने अभ्यास आरम्भ करने में रुचि दिखाई।

तिरुप्पुर आश्रम में खुला सत्र

पहले से ही एक परिपत्र निकाला गया था और इसके अनुसार 12 अगस्त को 75 आगंतुको की एक स्वयंसेवक दल द्वारा तिरुप्पुर के चेट्टीपलायम योगाश्रम मे अगवानी की गई। भाई रवि सुब्बयन, केन्द्र प्रभारी, ने अतिथियों का स्वागत किया और अभ्यास आरम्भ करने के लिए आवश्यक बातों के बारे में समझाया। कुछ स्वयं सेवकों ने, किन परिस्थितियों में उनका मिशन से परिचय हुआ और किस प्रकार वे साधना के लाभों के बारे में जान पाए, इन सबके बारे में अपने अनुभव बताए।

पचास अतिथियों ने अपनी पहली सिटिंग उसी दिन ली और सबकी सिटिंग पूरी होने तक शाम के चार बज गए। हर एक ने यह महसूस किया कि ऐसा अच्छा परिणाम केवल गुरुदेव की कृपा से ही सम्भव हो सकता है।

युवा कार्यक्रम–मैसूर

संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस– 12 अगस्त 2012 के अवसर पर बेंगलोर से करीब 30 युवा जन एक संध्या पूर्व मैसूर आश्रम पधारे। यात्रा के दौरान उन्हें एक दूसरे को जानने–समझने का अवसर मिला था और सायंकालीन भोजन के दौरान हरेक को किसी एक व्यक्ति का, जिससे वे तभी मिले थे, परिचय कराने के लिए कहा गया। तत्पश्चात् सार्वभौमिक प्रार्थना हुई और बाद में एक चलचित्र 'किंग्स् स्पीच्' दर्शाया गया। दूसरे दिन व्यक्तिगत ध्यान के पश्चात् क्रिकेट, आश्रम में लंबी सैर और कुछ खेलों के लिए समय था। मैसूर केन्द्र के कुछ युवा लोग भी कार्यक्रम में शामिल हुए। सुबह 9:30 बजे सत्संग और जलपान के उपरान्त गुरुदेव द्वारा लालाजी मेमोरियल ओमेगा इन्टरनेशनल स्कूल के भूतपूर्व छात्रों को दी गई वार्ता के साथ सभा आरम्भ हुई। वार्ता पर परिचर्चा को बहन प्रिया हेगडे ने आगे बढ़ाया।

प्रतिभागियों को दो समूहों में विभाजित किया गया और उन्हें एक आलू को अपना दोस्त मानकर और एक कहानी रचकर उसका समूह में परिचय कराने के लिए कहा गया। इसके लिए चिंतन एवं रचनात्मकता की जरूरत थी और जीवन के आध्यात्मिक एवं भौतिक पक्षों से मिली–जुली हास्यप्रद (हास्य–विनोद पूर्ण) कहानियाँ सामने आईं। एक विराम के बाद 'चुनो और बोलो' सत्र हुआ जहाँ हरेक को गुरुदेव का एक उद्धरण दिया गया जिस पर दो मिनट के लिए बोलना था। बाद में समूह को दो वर्गो मे बॉटा गया और उनके लिए सामान्य ज्ञान की प्रश्नोत्तरी का संचालन बहन अनन्या द्वारा किया गया।

रेखाचित्र कार्यक्रम, भीलवाड़ा, राजस्थान

ग्रीष्म अवकाश में आठ से सोलह साल की उम्र के बच्चों के लिए 'प्रकृति' विषय पर एक रेखाचित्र कार्यक्रम आयोजित किया गया और अठ्ठारह से तीस साल की उम्र के युवाजनों के लिए 'अपेक्षा' विषय पर एक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। 8 जुलाई को परिणाम घोषित किए गए और सभी रेखाचित्रों को ध्यान केन्द्र में प्रदर्शित किया गया। एक रेखाचित्र ने सभी लोगों का ध्यान आकर्षित किया जिसमें प्रतिभागी ने एक बच्चे, एक ग्रामीण व्यक्ति और एक शहर के व्यक्ति का प्रकृति की ओर देखने का अलग–अलग नज़रिया पेश किया।

युवा कार्यक्रम, कोलकाता, पश्चिमी बंगाल

कोलकाता आश्रम में करीब 100 अभ्यासी हैं जो 18–35 वर्ष के आयु वर्ग में हैं किन्तु यह देखा गया है कि इनमें से केवल 15–20 लोग ही रविवारीय सत्संग और आश्रम के क्रिया–कलापों में भाग लेने में सक्रिय हैं। इन सभी को इकठ्ठा करने और क्रिया–कलापों में भाग लेने के लिए प्रेरित करने की कोशिश में कुछ अभ्यासियों ने मिलकर एक कार्य–योजना बनाने का निश्चय किया।

कई सुझाव सामने आए; जैसे समूह के आँकड़े–कोष (डेटाबेस) इकठ्ठा करना, प्रति सप्ताह सत्संग के बाद पुस्तक–वाचन सत्र का आयोजन करना, बाहरी क्रिया–कलाप जैसे क्रिकेट इत्यादि। अभ्यासियों को अपना नाम दर्ज कराने हेतु बढ़ावा देने के लिए लगातार तीन रविवार तक एक युवा बूथ लगाया गया।

तत्पश्चात् जुलाई 2012 से प्रत्येक रविवार को दो घंटों के लिए अनौपचारिक सभाएं आयोजित की जाती हैं और संख्या में धीमी परन्तु निश्चित रूप से वृद्धि हो रही है। यह सभाएं संवादात्मक रही हैं जिनमें साधना के प्रमुख पहलुओं पर चर्चाएं की जाती हैं और अभ्यासियों को अपने अन्दर पाए गए बदलावों के बारे में अपने अनुभव आपस में बाँटने के लिए तथा गुरुदेव द्वारा दी गई वार्ताओं के सामूहिक वाचन के साथ–साथ आत्म–निरीक्षण करने के लिए उत्साहित/प्रेरित किया जाता है। हम आशा करते हैं कि यह समूह गुरुदेव के मार्गदर्शन में बढ़ोतरी करेगा।

दिल्ली का क्षेत्रीय आश्रम

प्रकाश का केन्द्र

दिल्ली शहर के आर. के. पुरम इलाके में एक आश्रम है तथा दूसरा आश्रम दिल्ली–हरियाणा की सीमा पर स्थित है। दूसरा आश्रम जो कि ज़ोनल आश्रम है, गुड़गाँव आश्रम के नाम से जाना जाता है। यह आश्रम अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से 12 किलोमीटर तथा राष्ट्रीय हवाई अड्डे से 15 किलोमीटर दूर है।

यह आश्रम 6.5 एकड़ भूमि पर स्थित है। 15 जून 2001 को गुरुदेव ने इस आश्रम का उद्घाटन किया था। ध्यान–कक्ष में लगभग 2000 अभ्यासी बैठ सकते हैं। आरंभ में मणपाक्कम आश्रम के पुराने ध्यान–कक्ष से लाए गए एस्बैस्टस की छत तथा स्टील के ढ़ाँचे द्वारा छत बनाई गई थी। बाद में नवीनीकरण के समय एस्बैस्टस की चादरों को हटाकर धातु की चादरों द्वारा छत बनाई गई। ध्यान–कक्ष को बड़ा करने के लिए उसके दोनों ओर अतिरिक्त खंड जोड़े गए। ग्रीष्म ऋतु में जब बहुत अधिक गर्मी होती है तब पानी का छिड़काव करके छत को गीला किया जाता है। साथ ही छत को आवरणयुक्त किया गया है जिसके परिणामस्वरूप ध्यान–कक्ष की गर्मी बहुत कम हो गई है।

गुरुदेव का कार्यालय ध्यान–कक्ष के एक ओर स्थित है। कार्यालय के सामने एक हरा–भरा मैदान है जहाँ वे दिल्ली केन्द्र की यात्रा के दौरान बैठते हैं। 20 अप्रैल 2008 को गुरुदेव ने इस भवन का उद्घाटन किया था तथा सामने की ओर दो पौधे लगाए थे। उन्होंने द्रोणाचार्य की मूर्ति का भी अनावरण किया था। ऐसा माना जाता है कि गुड़गाँव (गुरु+गाँव) का नाम इन्हीं पर आधारित है।

आश्रम के एक कोने में एक बड़ा रसोईघर है जिसके एक हिस्से में कैन्टीन है। आश्रम में आधुनिक प्रसाधन कक्ष हैं। अभ्यासियों की संख्या अधिक होने पर अतिरिक्त प्रसाधन कक्ष खड़े करने की सुविधा है। आश्रम में वाहन खड़े करने के लिए पर्याप्त स्थान है। बाल–केन्द्र तथा किताबों की स्टॉल मुख्य द्वार के पास ही है। बच्चों के खेलने का स्थान भी है। आश्रम का आधे से अधिक हिस्सा मौसमी सब्जियों की जैविक खेती करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। चार माली तथा एक कार्यवाहक अपने परिवारों के साथ आश्रम में रहते हैं। यह आश्रम आस–पास के केन्द्रों के लिए मिशन के प्रकाशन का वितरण केन्द्र भी है। महीने के पहले रविवार को पूरे दिन का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

31 मई 2009 को सत्संग कराने के पश्चात् गुरुदेव ने सत्संग का समय बदलकर पूरे विश्व के केन्द्रों के लिए सुबह 7:30 बजे कर दिया। गुरुदेव ने मानव अस्तित्व के उद्देश्य पर ज़ोर देते हुए कहा, "मैं आप लोगों का ध्यान इस ओर फ़िर दिलाना चाहता हूँ कि हम जीवन में जो कुछ भी करते हैं– साँस लेना, खाना, पीना, कार्य करना, आराम करना, सोना, सब कुछ इस नियम के अनुकूल होना चाहिए कि यह जीवित रहने के लिए है, और जीवित रहने का एक ही उद्देश्य होना चाहिए कि मैं अपने आपको मानव–स्तर से ऊपर उठाकर दिव्य–स्तर तक ले जा सकूँ।"

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.